अध्याय 5

बाढ़ से पहले के कुलपति

अध्याय 5 नूह और बाढ़ के समय का परिचय देता है। बाढ़ से पहले की पीढ़ियों और घटनाओं को "एंटेदिलुवियन" कहा गया है, जो दो लैटिन शब्दों से बना है - *एंटे*, जिसका अर्थ है "पहले," और *दिलुवियम* जिसका शाब्दिक अर्थ है "बह जाना" और इसलिए ये बाढ़ या बह जाने की ओर इशारा करता है। यह वाक्यांश "एंटेदिलुवियम कुलपति" अकसर बाइबल में नूह से पहले आदम तक की पीढ़ी के लिए प्रयोग किया जाता है और यह "बाढ़ के पहले के पूर्वज" कहने का एक तरीका है।

हालांकि उत्पत्ति के लेखक बाढ़ के पहले से आदम से कैन तक की सात पीढ़ियों का पता लगा चुका था (अध्याय 4), पर यहाँ उसने शेत से "आदम की पीढ़ी" के नए भाग को आरम्भ किया (अध्याय 5)। इस दूसरी सूची में आदम से नूह तक की दस पीढ़ियां शामिल हैं।

इन दो वर्णनों ने बाइबल के उन छात्रों के मन में भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर दी है जो आदम की सृष्टि से नूह तक के अंतर को खोजने के लिए इन वंशावलियों का प्रयोग करते हैं। यहाँ पर कई सवाल उठते है: (1) समय बीतने के संबंध में, क्या कैन के वंशज शेत के वंशज के लगभग बराबर थे? (2) यदि ऐसा है तो, क्यों कैन के वंशज शेत के वंशज की तुलना में ज़्यादा समय तक जीवित रहे? यह चिंताजनक है, क्योंकि कैन की संतान हिंसा को दर्शाते हैं (4:8-24; 6:1-5, 11-13)। यह माना जा सकता है कि उनका जीवनकाल छोटा रहा होगा, न कि अधिक। (3) शेत के वंशजों की तुलना में हमें कैन की वंशावली में बहुत लंबे जीवनकाल का उल्लेख क्यों नहीं मिलता है? (4) क्या उत्पत्ति के लेखक के पास कैन की केवल सात पीढ़ियों के बताने का कोई प्रतीकात्मक कारण है, जबकि उसने आदम से शेत और शेत से नूह के बीच की दस पीढ़ियों को शामिल किया? (इन सवालों के कुछ उत्तरों के लिए, *अनुप्रयोग: वंशावलियां*, पृष्ठों 167-173 को देखें।)

सृष्टि और आशीष (5:1, 2)

1आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया; 2उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा।

आयतें 1, 2. इस वचन में एक और बार תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ)* कथन प्रकट होता है, परन्तु यह उत्पत्ति के अन्य सभी वर्णन से भिन्न है: यहाँ यह **आदम की पीढ़ियों की** [टोलडोथ] **किताब** [סֵפֶר, *सेपेर*] के रूप में प्रयोग होता है। भाषा इस बात की ओर संकेत करती है कि उत्पत्ति में इस वंशावली को शामिल किए जाने से पहले भी इसका वर्णन अलग किसी हस्तलेख[1] में विद्यमान था जिसे लेखक ने आदम से शेत और शेत से नूह की विषय सामग्री के लिए अपने स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया। पुराने नियम के लेखक ऐसे अन्य हस्तलेखों के विषय में जानते हैं जो कि प्राचीन काल से अस्तित्व में है जैसे, "प्रभु के युद्धों की पुस्तक" (गिनती 21:14) और "याशार की पुस्तक" (यहोशु 10:13; 2 शमूएल 1:18), और उन्होंने कभी-कभी इसका ज़िक्र परमेश्वर के लोगों के जीवन की घटनाओं को बताते समय भी किया।

शेष वचन 1 और 2 एक काव्य संरचना (ABCBA) का रूप ले लेती है, जो 1:27 और 2:4 में पाए जाने वाले वचनों के जैसा दिखता है:

A1: **जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की**
B1: **तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया;**
C1: **उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की**
B2: **और उन्हें आशीष दी,**
A2: **और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा।**

मिलते-जुलते शब्दों का उपयोग करके, लेखक अध्याय 5 की वंशावली को पहले मनुष्य (आदम) की रचना और 1:26-28 के धर्मविज्ञान से जोड़ता है। वह फिर से ज़ोर देता है कि "मनुष्य" को "परमेश्वर की समानता" में बनाया गया था। वह पहले ही मनुष्य के पतन और कैन और लेमेक द्वारा हत्या को अंजाम देने का वर्णन कर चुका था। शेत से नूह की कहानी में आगे बढ़ने से पहले, वह इस तथ्य को दोहराना चाहता था कि पतित मनुष्य अभी भी परमेश्वर के स्वरूप (समानता) को लिए हुए था। पाप और पाप में गिरना जन्म से विरासत में नहीं मिला है; वे लोगों के उन चुनावों का परिणाम जिन्हें वे अपने हृदय में चुन लेते हैं (6:5 पर टिप्पणियाँ देखें)। आदम और हव्वा से न केवल कैन की दुष्टतापूर्ण वंशावली निकली (4:1-24), परन्तु शेत की धार्मिक वंशावली भी निकली (4:25-5:32)।

लेखक सृष्टि की कहानी में से दूसरे विषय को दोहराता है (1:26-28): सत्य यह है कि परमेश्वर "ने उन्हें नर और नारी करके बनाया, और उन्हें आशीष दी और उन्हें मनुष्य कहा।" पाप का संसार में आने के बाद न केवल परमेश्वर का स्वरूप (समानता) उनके पास था, परन्तु परमेश्वर की मूल आशीष, जन्म देने की क्षमता भी उन के पास रही। पुरुष और स्त्री के वंश के द्वारा परमेश्वर की पहली आज्ञा भी मानव जाति के लिए परिपूर्ण रही: "फूलो-फलो, और पृथ्वी को अपने वश में कर लो" (1:28)।

आयत 1 और 2 कुछ शब्दों का खेल खेलते हैं, विशेषकर इब्रानी शब्द אָדָם *(आदम)* जिसे तीन बार दोहराया गया है। वचन 1 में, लेखक पहले मनुष्य के विषय में बात करता है, ताकि इब्रानी शब्द का अनुवाद उचित नाम "आदम" के साथ किया जा सके (देखें 5:3-5)। वचन 1 और 2 में, आदम को "मानव जाति" के सामान्य अर्थ में प्रयोग किया गया है और सामान्य तौर से इसे "मनुष्य" रूप में लिया जाना चाहिए। यह वचन 2 में यह स्पष्ट है, जहां लेखक उल्लेख करता है कि परमेश्वर ने, "उन्हें पुरुष और स्त्री करके बनाया, ... और उसे मनुष्य कहा।" इसलिए, "मनुष्य" *('आदम)* को यहाँ एक व्यक्ति के रूप में नहीं देखना चाहिए। यह आदम एक के रूप में व्यक्ति की ओर संकेत नहीं करता, परन्तु सम्पूर्ण "मानव जाति" के लिए, जो दोनों पुरुष और स्त्री से बना है। लैंगिकता एक दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं (1 कुरि. 11:11); दोनों परमेश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए ज़रूरी हैं, जिसमें पृथ्वी पर फलने-फूलने के लिए यौन क्रिया, प्रसव और प्रजनन की प्रक्रिया शामिल है।

आदम की नई वंशावली शेत से हनोक तक (5:3-20)

आदम से शेत तक (5:3-5)

3जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा। 4और शेत के जन्म के पश्चात आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी पुत्र बेटियां उत्पन्न हुईं। 5और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।

आयतें 3-5. हाबिल काफी समय पहले मर चुका था, परन्तु आदम का वंश कैन के वंश के माध्यम से जारी था, जिस प्रकार 4:1-24 में लिखा है। यहाँ लेखक **शेत** के माध्यम से एक नए वंश का आरम्भ करता है। जैसे **आदम** परमेश्वर के स्वरूप और समानता में सृजा गया था (1:26, 27; 5:1) और उसका **पुत्र उसकी समानता अर्थात उसके स्वरूप में था**, इससे यह ज्ञात होता है कि परमेश्वर का स्वरूप पतन में नहीं खोया था। जबकि मूल आशीष आदम के नए वंश में जारी थी, शेत को भी अपने माता पिता के पाप के परिणामों का सामना करना पड़ा जो की मृत्यु था (5:8)।

5:3-32 की सम्पूर्ण वंशावली में, लेखक हर आने वाली पीढ़ी में ज्येष्ठ पुत्र के जन्म को ही दर्ज करता है। इस प्रक्रिया में आदम के पहले दो पुत्र, कैन और हाबिल (4:1, 2), और नूह के तीन पुत्र शेम, हाम, और येपेत शामिल नहीं हैं (5:32)। हर पीढ़ी को जोड़ते समय, लेखक एक सुसंगत तरीके का पालन करता है: वह पुत्र के जन्म के समय पिता की आयु देता है और उसके बाद पुत्र का नाम। इसके बाद, वह पुत्र के जन्म के बाद पिता की शेष आयु के वर्षों की संख्या को

सूचित करता है और इस कथन को भी शामिल करता है कि **उसके और भी पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुए**। अंत में, वह पिता की मृत्यु के समय उसकी आयु का वर्णन करता है।

इस अध्याय में लोगों की लंबी आयु को सूचीबद्ध किए जाने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, **आदम ... नौ सौ तीस वर्ष हुआ**। वास्तव में, कहा जाता है कि इन लोगों में से अधिकतर की आयु नौ सौ से अधिक वर्ष की थी। आलोचक इतने लंबे जीवनकाल को मानने से इनकार करते हैं जैसा उत्पत्ति 5 में दर्ज है। लेकिन इन आयु को अविश्वसनीय मान कर खारिज करने के बजाए, पाठकों को इन्हें, परमेश्वर के अनुग्रह के रूप में, गम्भीरता से लेना चाहिए।[2] अध्याय 3 और 4 ईश्वरीय अनुग्रह को दर्शाते हैं जिसके द्वारा आदम, हव्वा, और कैन को जीवित रहने की अनुमति मिली जबकि वे अपने पापों के कारण मृत्यु के योग्य ठहरे।

बाढ़ के बाद, मानव जाति के जीवन काल में तेजी से कमी आई थी। हालांकि नूह 950 वर्ष जीवित रहा (9:29), उसके पुत्र शेम की आयु केवल 600 वर्ष रही (11:10, 11)। कई पीढ़ियों के बाद, अब्राहम का 175 वर्ष की आयु में (25:7) निधन हो गया। उसके कई सदियों बाद, मूसा 120 वर्ष तक रहा (व्यव. 34:7)। और यह जीवनकाल तब तक कम होता रहा जब तक यह सामान्य 70 या 80 वर्ष तक नहीं पहुँच गया (भजन 90:10)।

मनुष्य के जीवन समय का कम होना परमेश्वर का यह बताने का तरीका हो सकता है कि समय के साथ-साथ पाप के प्रभाव के कारण मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता स्तर में घटता जा रहा था, जबकि जनसंख्या और सांस्कृतिक उपलब्धियों में वह बढ़ता जा रहा था। इस अध्याय में आदम की वंशावली बार-बार एक ही बात के दोहराया जाने के साथ समाप्त होती है कि: **और वह मर गया** (देखें 5:8, 11, 14, 17, 20, 27, 31)। यह अनिष्टकारी मृत्यु की ध्वनि इस तथ्य की याद दिलाती है कि “मृत्यु सब मनुष्यों में फ़ैल गयी, क्योंकि सभी ने पाप किया” (रोमियों 5:12)।

वंशावली की सूची मानवजाति के पूर्वजों का सही ब्यौरा देती है, जिसमें उनके बच्चों के उत्पन्न होने के समय उन की आयु और उनके मरने के समय उनकी आयु शामिल है। बाइबल में दी गयी वंशावली की सूचियों की तुलना करने से पता चलता है कि अक्सर उनमें ऐसे विशेष नामों को ही शामिल किया गया, जो महत्वपूर्ण थे। इसका मतलब यह है किसी विशेष वंशावली को सम्पूर्णता की दृष्टि से देखने के बजाए प्रतिनिधित्व के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए।

शेत से हनोक तक (5:6-20)

6जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ, तब उसने एनोश को जन्म दिया। 7और एनोश के जन्म के पश्चात शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। 8और शेत की कुल अवस्था नौ सौ बारह वर्ष की हुई:

तत्पश्चात वह मर गया। [9]जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उसने केनान को जन्म दिया। [10]और केनान के जन्म के पश्चात एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां हुई। [11]और एनोश की कुल अवस्था नौ सौ पांच वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया। [12]जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, तब उसने महललेल को जन्म दिया। [13]और महललेल के जन्म के पश्चात केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। [14]और केनान की कुल अवस्था नौ सौ दस वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया। [15]जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उसने येरेद को जन्म दिया। [16]और येरेद के जन्म के पश्चात महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। [17]और महललेल की कुल अवस्था आठ सौ पचानवे वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया। [18]जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, जब उसने हनोक को जन्म दिया। [19]और हनोक के जन्म के पश्चात येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। [20]और येरेद की कुल अवस्था नौ सौ बासठ वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।

आयतें 6-20. शेत और **एनोश** के अलावा जिनका इस वंशावली 4:25, 26 में वर्णन किया गया है, आदम के वंश, जैसे **केनान** (5:9), **महललेल** (5:12), और **येरेद** (5:15) के बारे में बहुत कम जानकारी है। इन व्यक्तियों का वर्णन बाइबल में केवल दो बार दिखाई दिया है, 1 इतिहास के प्रारम्भिक वंशावली में (1 इतिहास 1:1, 2)। और लूका द्वारा दी गयी यीशु की वंशावली में (लूका 3:37, 38)।[3] कैन के वंश में जिनका उल्लेख किया गया है उन में से कुछ साधारणतः एक गुप्त श्रृंखला की तरह है, हालांकि, वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन लोगों ने अब्राहम और अंततः अब्राहम के महानतम वंश यीशु को संसार में लाने की परमेश्वर की योजना को आगे बढ़ाया था जिसके माध्यम से पूरे संसार को आशीष मिल सके (12:3)।

नूह से हनोक की वंशावली (5:21-32)

हनोक से मतूशेलह तक (5:21-24)

[21]जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उसने मतूशेलह को जन्म दिया। [22]और मतूशेलह के जन्म के पश्चात हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [23]और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। [24]और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

आयतें 21, 22. हनोक इस वंशावली में शेत से सातवें स्थान पर है, जो इस विचार को प्रकट करता है कि वह परमेश्वर की योजना में विशिष्ट रूप से

महत्वपूर्ण है। नए नियम में, उसे "आदम से सातवें" स्थान (यहूदा 14; NIV) पर कहा गया है।

हनोक बाढ़ से पूर्व के पूर्वजों में से अकेला व्यक्ति है जो मरा नहीं। इसका एक कारण यह हो सकता है कि **वह मतूशेलह के जन्म के तीन सौ वर्ष पश्चात भी परमेश्वर साथ चलता रहा**। शेत के अन्य वंशजों की तरह नहीं जिन्होंने बच्चे के जन्म को बस एक मानव प्रजनन के प्राकृतिक कार्य के परिणाम के रूप में देखा, यहाँ पर लेख इस बात की ओर संकेत करता है कि हनोक समझ गया था कि परमेश्वर के जीवनदायक हाथ ने उसे और उसकी पत्नी को आशीष के रूप में इस नवजात शिशु को प्रदान किया है (4:1 पर टिप्पणियाँ देखें)। शायद यही कारण है कि वह "परमेश्वर के साथ चलता रहा।" हो सकता है कि अन्य माता पिता की तरह, उसने भी अचानक एक आत्मिक सम्बन्ध की ज़रूरत को अपने जीवन में महसूस किया हो क्योंकि वे इस बात को अपने बच्चों के लिए एक उदाहरण बनाने की जिम्मेवारी को महसूस कर रहे थे। बात कुछ भी हो, महत्वपूर्ण कथन यही है कि हनोक ने परमेश्वर के साथ चलने की यात्रा शुरू कर दी थी।

"परमेश्वर के साथ चलने लगा" एक आम अभिव्यक्ति है, पर इसका सटीक अर्थ स्पष्ट नहीं है। बाइबल में केवल एक अन्य जगह जहां इस इब्रानी शब्द को पाया जाता है वह नूह के संदर्भ में है, उसे भी "परमेश्वर के साथ चलता था" कहा गया है (6:9)।[4] इस संदर्भ में उसे "एक धर्मी मनुष्य, अपने समय में निर्दोष" के रूप में वर्णित किया गया है। हालांकि, "निर्दोष होने का मतलब यह नहीं है कि नूह निष्पाप था," "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि हनोक और नूह दोनों विश्वास के पुरुष थे (इब्रा. 11:5, 7) जो परमेश्वर के साथ "दीनता से चलते" थे (मीका 6:8; देखें मत्ती 23:23)। हनोक, नूह, और अन्य लोग जो "परमेश्वर के साथ चलते थे" उन्होंने परमेश्वर के लिए अपने हृदयों को समर्पित किया है और उस को प्रसन्न करने की कोशिश की। वे अपने दैनिक जीवन में आराधना और संगति के द्वारा परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध का आनंद लेते होंगे।

आयत 23. हनोक की कुल अवस्था **तीन सौ पैंसठ वर्ष** थी। उसके जीवन के वर्षों की संख्या और वर्ष के दिनों के अनुरूप थी। इसलिए, कुछ समझते है कि हनोक की आयु एक सम्पूर्ण जीवन का प्रतीक है। यहाँ तक कि पृथ्वी पर हनोक के वर्ष यद्यपि अपने समकालीन लोगों की तुलना में आधे से भी कम थे, परन्तु वह परमेश्वर के साथ सहभागिता में एक पूर्ण जीवन को जी सका।

आयत 24. यह लेख इस तथ्य को दोहराता है कि **हनोक परमेश्वर के साथ चलता था** (देखें 5:22) ताकि उसके धर्मी चरित्र पर प्रकाश डाला जाए। यह कथन **कि वह** אֵינֶנּוּ (*इयनेनु*) **नहीं है** पुराने नियम में कभी-कभी मृत्यु के लिए एक कोमल भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता था (देखें अय्यूब 7:21; 8:22; भजन 39:13 [14]; 103:16)। मध्यकालीन यहूदी टीकाकार राशि कहता है कि परमेश्वर ने हनोक को समय से पहले ही मरने दिया ताकि वह पाप न कर पाए।[5]

हालांकि, यहाँ पर इसका यह अर्थ नहीं हो सकता क्योंकि यह नियमित रूप से लिखे जाने वाले वाक्यांश "और वह मर गया" के विपरीत है, "जो अध्याय 5 में आदम से नूह तक के सूचीबद्ध अन्य सभी पुरुषों के बारे में लिखा है। हनोक इस अवधि में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जिसने आदम के समान: ... तू निश्चित रूप से मर जाएगा" (2:17) मृत्यु नहीं चखी। बल्कि वह मृत्यु के भयानक दंड के बीच घिरा होने के बाद भी जीवित रहा।

हनोक के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की विशेषता प्रकट रुप से इतनी घनिष्ठ थी कि परमेश्वर ने उस पर से मृत्यु की सज़ा को हटा दिया और उसे अपनी उपस्थिति में ले लिया।[6] इब्रानियों के लेखक ने कहा, "विश्वास ही से हनोक **उठा लिया गया**, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि परमेश्वर उससे प्रसन्न था" (इब्रा. 11:5)। चूंकि उत्पत्ति 5 इस बात का उल्लेख है कि बाढ़ से पहले कई लोग थे जो लंबे समय तक जीवित रहे, लेकिन हनोक की कहानी यहाँ शायद इसलिए डाली गई क्योंकि वह इससे भी बड़ी आशीष की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता था। पृथ्वी पर शारीरिक जीवन की लंबाई सबसे महत्वपूर्ण मानवीय अनुभव नहीं, परन्तु आत्मिक जीवन की गुणवत्ता है जो परमेश्वर के अनन्त उपस्थिति की ओर ले जाती है।

एलिय्याह नबी ही एक और ऐसा व्यक्ति था जो शारीरिक मृत्यु के दुख को सहे बिना स्वर्ग में उठा लिया गया था (2 राजा 2:1, 11)। परमेश्वर ने, इन दोनों ही मामलों में मृत्यु की सज़ा को हटा दिया, संभवतः उस घटना की ओर संकेत करते हैं जब यीशु मसीह के द्वारा "मृत्यु पर विजय प्राप्त की गयी" (1 कुरि. 15:54)।

मतूशेलह से लेमेक तक (5:25-27)

25जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उसने लेमेक को जन्म दिया। 26और लेमेक के जन्म के पश्चात मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। 27और मतूशेलह की कुल अवस्था नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।

आयतें 25-27. मतूशेलह के बारे में विशेष तथ्य यह है कि वह किसी भी ज्ञात मनुष्य से अधिक समय तक जीवित रहा - **नौ सौ उनहत्तर वर्ष**। क्यों उसका जीवन सबसे लंबे समय का था - जबकि उसके पिता हनोक का सबसे कम बताया गया है - इस बात को विस्तार से नहीं बताया गया है। "मतूशेलह" नाम का अर्थ विवादित है, कुछ इसको नरक के कनानी देवता के साथ जोड़ते हैं; हालांकि, इसका अर्थ सामान्य रूप से "भाले का पुरुष" प्रतीत होता है।[7]

बाइबल के लेखक, उनके जीवन के विभिन्न परिणामों पर विचार करके, इस बात पर जोर देते है कि पिता (हनोक), उत्पत्ति 5 में वर्णित दूसरों की तुलना में

एक छोटे से जीवन को जीने के बाद परमेश्वर के द्वारा उठा लिया गया, जबकि बेटा (मतूशेलह) वंश सूची में अन्य सभी की तुलना में लंबे समय तक जीवित तो रहा लेकिन फिर भी मृत्यु द्वारा निगल लिया गया। अंतिम विश्लेषण में, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कोई व्यक्ति कितने समय तक जीवन बिताता है, परन्तु यह महत्वपूर्ण है कि वह कितनी अच्छी तरह बिताता है; और जीवन की गुणवत्ता इस बात से निर्धारित की जाती है कि वह "परमेश्वर के साथ चला" या नहीं।

लेमेक से नूह तक (5:28-32)

28जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, तब उसने एक पुत्र जन्म दिया।
29और यह कहकर उसका नाम नूह रखा, कि यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं, हम को शान्ति देगा। 30और नूह के जन्म के पश्चात लेमेक पांच सौ पचानवे वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। 31और
लेमेक की कुल अवस्था सात सौ सतहत्तर वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।
32और नूह पांच सौ वर्ष का हुआ; और नूह ने शेम, और हाम और येपेत को जन्म दिया।

आयतें 28, 29. यह वचन एक और **लेमेक** का परिचय देता है। हालांकि उसका नाम कैन के वंशज के नाम के समान ही था (4:18-24), वह एक बहुत ही अलग तरह का व्यक्ति था। पहला लेमेक बदला लेने के लिए लालायित था और हत्या करके आनंदित था, जबकि मानव जाति के एक बेहतर भविष्य के लिए आशा व्यक्त करता है। वास्तव में, अध्याय 5 में लेमेक ही एकमात्र पिता है जो अपने पुत्र के नाम के अर्थ को निकालता है: **और यह कहकर उसका नाम नूह रखा, कि यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं, हम को शान्ति देगा।** नाम "नूह" נֹחַ *(नोअक)* का मूल अर्थ अज्ञात है। पद 29 में, ऐसा प्रतीत होता है इसका प्रयोग कर के दूसरा शब्द נָחַם *(नकाम)* बनाया गया है, NASB जिसका अनुवाद "आराम देने वाला" के रूप में करती है। इस शब्द का वास्तविक अर्थ "आराम" या "राहत लाना" है। हालांकि, "नूह" क्रियात्मक शब्द נוּחַ *(नुआक)* से सीधे सम्बन्धित है और जिसका अर्थ है "आराम," और इसमें जय और उद्धार की ध्वनि सुनाई पड़ती है।[8] यह काव्यात्मक शब्दों के प्रयोग का एक और उदाहरण हो सकता है जो सुनने में एक जैसे लगते हैं, परन्तु वास्तव में विभिन्न शब्दरूप से उत्पन्न हुए हैं।

जिस तरह से "लेमेक" ने "नूह" के विषय में बोला था, "वह जो हमारे काम में, और हमारे कठिन परिश्रम में हम को शान्ति देगा।" इसका मतलब यह हो सकता है कि पिता अपने पुत्र में एक दूसरे प्रकार के आदम के रूप को देख रहा था। शायद उसे आशा थी कि यही स्त्री को वायदे के अनुसार दिया जाने वाला

फल है (3:15) जो किसी भी तरह पृथ्वी पर आये अभिशाप को पलट देगा और उन लोगों को राहत देगा जो मिट्टी से भोजन पाने के लिए संघर्ष करते हैं। परमेश्वर मनुष्य के लिए कुछ करेगा इसके लिए वह जो कुछ भी सोच रहा था, वह निश्चित रूप से समझ नहीं पाया था कि पृथ्वी पर मानवता की एक नई शुरुआत जल प्रलय के द्वारा दुष्ट और हिंसक पीढ़ी के नाश होने के द्वारा ही होगी, जिसमें केवल नूह और उसका परिवार ही बचेगा।

आयतें 30, 31. और लेमेक की कुल अवस्था सात सौ सतहत्तर वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया। क्योंकि उसकी आयु के वर्णन में "7" के गुणकों का उपयोग किया गया है, इसलिए पाठक यह देखने को इच्छुक होते हैं कि नूह के पिता ने एक अच्छे और सिद्ध जीवन का आनन्द उठाया था जैसा सिद्ध संख्या "7" का उपयोग करके बताया गया है। हालांकि, इस पाठ में कुछ भी ऐसा कारण नहीं दिया गया जिससे पता लगे कि उसने इस तरह के एक आदर्श जीवन का निर्वाह किया है। इसके विपरीत, वह कठिन "परिश्रम" और संघर्ष का वर्णन करता है जो उसे और उसकी पीढ़ी को सहना पड़ा (5:29)। इसके अलावा, **नूह के जन्म के पश्चात लेमेक पांच सौ पचानवे वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।** निश्चित रूप से समय की इस लंबी अवधि के दौरान उसके कई पोते पोतियाँ और परपोते-पोतियाँ रहे होंगे। चूंकि इस वर्णन के समयानुसार लेमेक जल प्रलय से पांच वर्ष पहले तक रहा (5:30-32; 7:6), इसलिए उसे यह पता होगा कि उसके बेनाम "बेटों और बेटियों" उस दुष्ट पीढ़ी का हिस्सा थे।

आयत 32. नूह, धार्मिकता का प्रचारक (2 पतरस 2:5), जिसने अपने समय के लोगों की अपने संदेश की उस समय कड़ी आलोचना सही जब उसकी नाव के निर्माण का कार्य चल ही रहा था (इब्रा. 11:7; 1 पतरस 3:20)। इस घटना से लेमेक के हृदय पर काफी पीड़ा और भय अवश्य आया होगा। इसके साथ-साथ, भले ही नूह के तीन विवाहित पुत्र, थे शेम, हाम, और येपेत, इस विषय में कोई प्रमाण नहीं है कि लेमेक के जीवन के दौरान उनके बच्चे थे या नहीं।[9] इसलिए, लेमेक को यह सोचकर शायद भय और हताशा का अनुभव हो सकता है की उसकी पीढ़ी बिना किसी भविष्य के नाश हो जाएगी। इसके अलावा, क्योंकि लेमेक जल-प्रलय के आने से कुछ वर्ष पहले तक रहा था, इसमें कोई शक नहीं उसके शेष रह गये वर्षों में दुष्टता और हिंसा की अराजकता पूरे संसार भर में फ़ैल गयी और उसे इसका सामना करना था। इस में से कोई भी इस बात के अनुरूप नहीं है जो सम्पूर्ण जीवन संख्या "7" के गुणकों के द्वारा चिन्हित है। जबकि बाइबलीय वंशावलियों में अक्सर यह अंक एक सांकेतिक अर्थ रखता है, जैसा कि इस पाठ में पहले देखा जा चुका है, पर ऐसा नहीं लगता कि यह लेमेक के जीवन की लम्बाई के सन्दर्भ में है।

हम बाद में 9:29 में देखेंगे, कि **"**नूह की कुल अवस्था नौ सौ पचास वर्ष की हुई, और तत्पश्चात वह मर गया।"

अनुप्रयोग

वंशावलियां (4:17-5:32)

अध्याय 4 में, कैन की वंशावली की बढ़ती दुष्टता वर्णित है; परन्तु अध्याय 5 उन के वंश के विषय में बताता है जो परमेश्वर की आराधना करते थे: शेत से नूह तक की पीढ़ी। यह वापस परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य की सृष्टि और उसकी वास्तविक आज्ञा "फूलो-फलो, और पृथ्वी पर भर जाओ" से शुरू होती है (1:26-28)। इसका मुख्य उद्देश्य सृष्टि से जल प्रलय तक के अंतर को कम करने के लिए प्रतीत होता है, परन्तु यह इस बात को भी दर्शाती है कि कैसे आदम के पाप के परिणामस्वरूप संसार में "मृत्यु का राज्य स्थापित हुआ" (रोमियों 5:17)। यह एक संघर्ष का पूर्वानुमान लगाती है जिसके विषय में 3:15 में भविष्यवाणी की गयी और जो 6:1-8 में शिखर तक पहुँच गयी: एक तरफ़ कैन के हिंसक संतान, और दूसरी तरफ़ शेत के द्वारा उत्पन्न धर्मी वंश हैं। नूह के जीवन में इस अंतर को मुख्य रूप से देखा जा सकता है।

चयनात्मक वंशावली, 4:17-24 में, लेखक कैन के वंश की सात पीढ़ियों का एक संक्षिप्त विवरण देता है (इस गिनती में आदम भी शामिल है)। फिर, अध्याय 5 में, वह आदम की संतानों की उन दस पीढ़ियों को सूचीबद्ध करता है, जिनमें नूह और जल प्रलय के समय के बारे में बताया गया है। इस बाद की वंशावली का स्पष्ट अर्थ जो आयरिश धर्मशास्त्री और इतिहासकार जेम्स अशर के 1600 के दशक के कार्य पर आधारित है, यह है कि यह आदम से नूह तक के पूरी कालानुक्रमिक समय सारणी को प्रस्तुत करता है, उन लोगों के विषय में हैं जो नौ सौ वर्षों से अधिक जीए। हालांकि बहुत से लोग आज इस बात को प्राथमिकता देते हैं किस वर्णन में बताई गयी मनुष्यों की आयु अविश्वसनीय है, हालांकि जल प्रलय से पहले पृथ्वी की स्थिति आज की अपेक्षा में बहुत भिन्न थी, इसलिए लंबे समय तक जीवन संभावना के दायरे से बाहर नहीं है।

अशर का मानना था कि दस पीढ़ियों की वंशावली का आदम से नूह तक का विवरण एक सम्पूर्ण सूची है जिसमें कोई भी कालानुक्रमिक अंतराल नहीं था। उसने खगोलीय विवरणों की जांच की, प्राचीन कैलंडर संकलित किए, और प्राचीन राजाओं के ऐतिहासिक लेखों का अध्ययन किया। इस जानकारी के आधार पर, अशर ने प्रलय से पहले के पितरों के जीवन काल को जोड़ा जो अध्याय 5 में दिए गए हैं और सृष्टि की रचना से लेकर नूह के दिनों तक के समय की गणना की। उसने निष्कर्ष निकाला कि सृष्टि की रचना के 1,656 वर्ष के बाद जल प्रलय 2348 ई.पू. में हुआ था। उलटी गणन प्रक्रिया के द्वारा उसने सृष्टि की रचना 4004 ई.पू. में की, अर्थात जल प्रलय से 1,656 वर्ष पहले।

इस दृष्टिकोण के साथ बड़ी समस्या यह है कि: यह उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों में संकलित सभी घटनाओं, और प्राचीन सभ्यताओं जिनके विषय में हम इतिहास और पुरातत्व विज्ञान के माध्यम से जान पाए हैं, उन सबको बहुत कम

समय देता है।[10] सृष्टि और जल प्रलय के बीच 1,656 वर्ष की कठिनाई का एक प्रमुख उदाहरण मिस्र है: निर्णायक पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर मिस्र के पहले राजवंश की तिथि 3100 ई.पू. लगाई गयी है। यही साक्ष्य प्रमाणित करता है कि एक संयुक्त राज्य के होने से कई वर्ष पहले यहाँ पर कई छोटे-छोटे राज्य थे जो प्राचीन काल में संसार के उस भाग में काफी लम्बी अवधि के लिए थे। यह लगभग नामुमकिन है कि जल प्रलय के लंबे समय के बाद इनका जन्म हुआ जैसा की उत्पत्ति 10 में दर्शाया गया है कि मानव जाति में वृद्धि हुई थी। इसलिए, हमें उत्पत्ति 5 की वंशावली को अशर से अलग ढंग समझना चाहिए विशेष रूप से तब जब बाइबल सम्बन्धी वंशावली की सूची में काफी अंतर हैं।[11]

प्राचीन संसार में, वंशावली को अकसर शैलीगत उद्देश्यों के लिए है और लेखन के आविष्कार से बहुत पहले, उन्हें स्मरण रखने हेतु छोटा रखा जाता था। कभी-कभी पुराने नियम में एक व्यक्ति के नाम को मात्र उनके परिचय के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता था परन्तु उसके सैकड़ों वर्षों तक के परिवार या गोत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए भी उपयोग किया जाता था। इस का एक स्पष्ट उदाहरण न्यायियों 1:3 में पाया जाता है: जहां “यहूदा” और “शिमोन” के व्यक्ति होने के रूप में बातचीत करने को दिखाया गया है। यहाँ पर लेख कहता है, “तब यहूदा ने अपने भाई शिमोन से कहा ... ।” हालांकि, इसके पृष्ठभूमि की जांच से पता चलता है कि यह पद समस्त गोत्र के कार्य के बारे में था, क्योंकि यहूदा और शिमोन, याकूब के वास्तविक पुत्र, सैकड़ों वर्ष पूर्व मर चुके थे।[12]

संख्या “10” वंशावलियों को समझने हेतु संख्याओं के महत्व को समझना भी महत्वपूर्ण है। आदम से नूह तक की दस पीढ़ियों को 5:1-32 में चित्रित किया गया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से इस पद की तुलना प्राचीन सुमेरियन राजवंश के साथ की गई। इस सूची में दस राजाओं का नाम शामिल है, जो सब जल प्रलय से पहले बहुत लंबे जीवन को यापन कर चुके थे।

इन मेसोपोटेमियन शासकों को उत्पत्ति 5 में दिए गये दस नामों की सूची के स्रोत के रूप में देखा गया है, साथ ही लंबे जीवन जीने वाले उन पितरों के रूप में भी देखा गया है। हालांकि, इन सूचियों के बीच समानता की तुलना करने में अंतर बहुत अधिक रहे हैं। इन मतभेदों के लिए कई उदाहरण दिये जा सकते है, परन्तु कुछ ही पर्याप्त हैं। (1) सुमेरियन राजाओं की सूची के अन्य संस्करणों की खोज की गई है और इसमें केवल सात से नौ राजाओं का वर्णन है, दस का नहीं। (2) हालांकि एक लेख दस पीढ़ियों को सूचीबद्ध करता है, उस खाते में केवल राजाओं के बारे में दिया गया है; यह वह सूची नहीं है जिसमें पहले मनुष्य से आरम्भ होता है, जैसा बाइबल में दिया गया है। (3) विभिन्न राजा सूचियों का उद्देश्य मेसोपोटामिया के एक शहर पर राज्य स्थापित करना था, आदम से मानवता के इतिहास का पता लगाने के लिए, नूह और उसके परिवार के जीवित बचे लोगों के बारे में लिखने के लिए नहीं था। (4) एक ओर जहां सुमेरियन राजाओं के राज्य का समयकाल हर सूची के अनुसार अलग-अलग था, परन्तु उन सब को बहुत बढ़ा-चढ़ा के लिखा गया। सबसे लंबे समय का शासनकाल 72,000

वर्ष लिखा गया है; जबकि सबसे कम शासनकाल 6,000 वर्षों का बताया गया है।[13] इन सब बातों को एक साथ देखने पर, इन राज्यों की समय सीमा बाइबलीय वंशावली में सूचीबद्ध पितरों के औसत आयु से लगभग पचास गुना अधिक है। इसलिए, कोई वास्तविक प्रमाण इस दावे का समर्थन नहीं करता कि उत्पत्ति 5 में दी गयी वंशावली सुमेरियन राजा सूची पर आधारित है।

हालांकि यह संभव है कि उत्पत्ति के लेखक अंक "10" का इस्तेमाल एक आदर्श संख्या के रूप में महत्वपूर्ण लोगों की सूची तैयार करने के लिए करता है, जैसा कि सुमेरियन राजाओं की सूची तैयार करने वाला एक जन करता है, मेसोपोटामिया के लेख में कुछ भी ऐसा नहीं मिलता जिससे यह पता चलता हो कि बाइबल के लेखक उत्पत्ति 5 में संरक्षित जानकारी के लिए उस लेख पर निर्भर थे।

संख्या "10" का प्राचीन निकट पूर्वी लोगों के लिए विशेष महत्व मालूम होता है, भले ही हम निश्चित तौर से नहीं कह सकते कि ऐसा क्यों था। जल प्रलय के बाद, शेम (नूह के पुत्र) से अब्राहम तक की दस पीढ़ियां एक और अवधि का प्रतिनिधित्व करती है (11:10-26)। बेशक, यह संभव है कि वहाँ जल प्रलय से अब्राहम तक केवल दस पीढ़ियां थी। रूत 4:18-22 में दी गयी वंशावली से, जिसमें पेरेस से दाऊद तक की दस पीढ़ियों का उल्लेख है, यह स्पष्ट होता है कि पहले दी गयी सूची एक चयनात्मक सूची है जिस में से कई नामों को हटा दिया गया है। और यह बाद में दी गयी सूची के लिए भी सच है।

कोई नहीं जानता कि वास्तव में पेरेस और दाऊद के बीच में कितने वर्ष बीत चुके थे; परन्तु, बाइबल के अनुसार, पेरेस का जन्म उस समय हो चुका था जब यूसुफ को मिस्र में बेच दिया गया था (38:29; 39:1)। असली समस्या मिस्र में यूसुफ के प्रवेश के समय के विषय में है। इस घटना के लिए निर्धारित की गयी पहली तिथि 1898 ई.पू. है; परन्तु कई विद्वान 1710 ई.पू. का चुनाव करते हैं, एक ऐसे समय को अनुमानित करते हुए जो पेरेस और दाऊद के बीच 188 वर्ष से कम है। 1010 ई.पू. के बाद के समय को दाऊद के शासनकाल के आरम्भ के रूप में व्यापक रूप से माना जा चुका है अब बस एक ही प्रश्न है कि पेरेस के जन्म से दाऊद (प्रारंभिक दृश्य) के राज तक क्या 888 वर्ष बीत चुके थे या फिर इन दो घटनाओं के बीच केवल 700 वर्ष का अंतर था।

एक और मुद्दा, जो पेरेस और दाऊद के बीच पीढ़ियों की संख्या निर्धारित करने में शामिल है, यह है कि कितने वर्ष एक पीढ़ी के रूप में गिने जाने चाहिए। प्राचीनकाल में, यह प्रतीत होता है कि एक पीढ़ी की गणना एक व्यक्ति के जन्म से उसकी पहली सन्तान के जन्म के समय तक की जाती थी।[14] यह समय सीमा अंतिम पितृसत्तात्मक काल[15] में लगभग 40 वर्ष से लेकर मूसा के समय में लगभग 25 वर्ष के समय तक हो सकती है, क्योंकि लोगों का जीवनकाल घटकर 70 वर्ष रह गया था (देखें भजन. 90:10)। एक अनुमान के अनुसार 30 वर्ष के लगभग[16] शायद एक पीढ़ी की औसत अवधि जो पेरेस से दाऊद तक की अवधि है लगभग 888 वर्ष की रही होगी, जिसकी गणना इन दो पुरुषों के बीच 29½

पीढ़ियों की गणना के आस-पास होगी। तो एक पीढ़ी के लिए 30 वर्ष का जोड़ होता है और यदि इस छोटी अवधि को 700 वर्ष में विभाजित कर दिया जाए तो पेरेस और दाऊद के बीच 23 पीढ़ियों की गणना होगी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह हिसाब कैसे निकाला गया है, परन्तु परिणाम दस पीढ़ियों की तुलना में कहीं अधिक है जो आगे रूत 4:18-22 में दिया गया है। इससे पता चलता है कि अंक “10” का कुछ प्रतीकात्मक महत्व हो सकता है, और इसलिए केवल दस सबसे महत्वपूर्ण लोग इस वंशावली की सूची में शामिल थे।

अंक “7” रूत 4:18-22, अंक “7” भी विशेष महत्व का प्रतीत होता दिखाई देता है। बोअज इस वंशावली में सातवें स्थान पर सूचीबद्ध है; और, यह सुनिश्चित है, कि वह कहानी का नायक है।[17] अंक “7” प्रारम्भ से ही मनुष्य के इतिहास में सिद्धता और पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना और विश्राम सब कुछ सात दिनों में सिद्ध और सम्पूर्ण बनाया (1:1-2:3)। आदम की वंशावली का लेखा जो कैन के साथ शुरू हुआ लेमेक के बच्चों के साथ समाप्त होता है, उसमें सात पीढ़ियां शामिल हैं, परन्तु उसमें दस पुरुष सदस्य, लेमेक के तीन पुत्र भी शामिल हैं (4:17-22)।[18]

यदि गिनती आदम के साथ शुरू होती है और उसकी भावी पीढ़ी कैन से शुरू होती है तो “लेमेक” का नाम इस लेख में सातवें स्थान पर आता है। निस्संदेह, कैन के वंश में जिन लोगों का नाम वंशावली में दिया गया है जल प्रलय से पहले उस सूची में और भी अधिक वंशज रहे होंगे, जबकि लेखक ने शेत के परिवार की पीढ़ियों का वर्णन प्रारम्भ कर दिया था। उसने आदम से शुरू करके शेत के माध्यम से नूह तक का वर्णन किया (5:1-29)। क्यों उत्पत्ति के लेखक ने लेमेक का नाम सूची में सातवें स्थान पर रखा जबकि वहां पर दस नाम लिखे जा सकते थे इस बात पर निर्भर करते हुए कि उन्हें किस प्रकार गिना जाये? हो सकता है कि वह लेमेक द्वारा दुष्टता और हिंसा की चरम सीमा (सम्पूर्णता) तक पहुँचने के बारे में जोर देना चाहता था, जिस प्रकार से वह सृष्टि के सात पीढ़ियों में हत्या करने का गौरव ले रहा था।

अंत में, इस तरह का एक घृणित और ईर्ष्यालु रवैया बड़े पैमाने पर हिंसा और हत्या के द्वारा समाप्त हुआ। इस घटना ने सारे समाज को वास्तविक रूप से प्रभावित किया और नूह के समय आये जल प्रलय के रूप में उपजे परमेश्वर के न्याय को लेकर आया। शायद परमेश्वर मानव जाति की अंतिम पीढ़ियों के उन हिंसक और दुष्ट सदस्यों के नाम की रक्षा नहीं करना चाहता था, जो उस जल प्रलय से विनाश की घटना के लिए ज़िम्मेदार थे, जिससे पुराने संसार का अंत हुआ। यह ऐसा है जैसे लेमेक द्वारा बदला लेने की भावना (4:23, 24) उन सब बुरे लोगों में समाई हो।

कैन की वंश के संबंध में, अंक “7” को और इसके गुणकों को लेमेक के कथन के प्रकाश में आगे और महत्व दिया जाना चाहिए। इस से पाठक अध्याय 5 में दिए गये अंक “7” के विशेष स्थान को समझने के लिए तैयार होंगे। आदम की पीढ़ियों के लेख में, जो शेत से हनोक तक के वंश को सातवीं पीढ़ी के रूप में प्रकट

किया गया है (5:1-19)। दोनों लेमेक और हनोक को आदम से सातवीं पीढ़ी के होने के रूप में चित्रित किया जा रहा है (विभिन्न वंशजों के माध्यम से); परन्तु, जहाँ पर पहले वाला व्यक्ति सतहत्तर बार प्रतिशोध लेने की अपनी इच्छा में दुष्टता का प्रतीक बन रहा था, वहीं पर यह पिछला व्यक्ति एक विश्वासयोग्य और धर्मी मनुष्य का प्रतीक बना संसार जिसके योग्य नहीं था। इसलिए, “परमेश्वर ने उसे उठा लिया” (5:24)।

मत्ती द्वारा लिखी गई यीशु की वंशावली में अंक “7” का उपयोग किया गया है और इसमें आए अंतर को लूका द्वारा वर्णित वंशावली में जाँचा जा सकता है, साथ ही कुछ पुराने नियम के लेखों में भी इसकी जांच की जा सकती है। मत्ती 1:1-17 में अब्राहम से यीशु तक बयालीस पीढ़ियों की सूची है, और इन्हें चौदह चौदह पीढ़ी (7x2) के तीन समूहों में बांटा गया है। तथापि, इस संख्या तक पहुंचने के लिए, मत्ती ने “यकोन्याह” नाम का इस्तेमाल दो बार किया है, दूसरे समूह में अंतिम नाम के रूप में तीसरे समूह में और पहले नाम के रूप में (मत्ती 1:11, 12)।

लूका 3:23-38 में वर्णित वंशावली सबसे पहले दो समूहों को सूचित करती है, जिसमें से प्रत्येक में इक्कीस पीढ़ियां शामिल है (7x3), यीशु से दाऊद तक। फिर, दाऊद से अब्राहम, जिसमें चौदह पीढ़ियां सम्मिलित है (7x2)। अंत में, यह इक्कीस पीढ़ियों का उल्लेख करती है (7x3) जिसमें अब्राहम से आदम तक का वर्णन है। यीशु से आदम तक कुल सतहत्तर पीढ़ियां (7x11) गिनी गयी है। जिनमें से निम्नलिखित लूका में प्रमुख है: हनोक सातवें, शीला चौदहवें, और अब्राहम इक्कीसवीं स्थान पर आता है। अम्मीनादाब अठ्ठाइसवें पर, दाऊद पैंतीसवे पर, और योनाम का पुत्र यूसुफ बयालीसवें स्थान पर है। गिनती जारी रखते हुए, एलीएजेर का बेटा यहोशू, उन्चासवें पर, शालतीएल छप्पनवें स्थान पर, और शिम्मी का पुत्र मत्तित्याह तिरसठवें पर। मत्तित्याह का पुत्र यूसुफ अकेले सत्तरवें स्थान पर है; और अंत में, यीशु, जो “यूसुफ का वैध पुत्र है,” आदम के भौतिक वंशज के रूप में सतहत्तरवें स्थान पर गिना गया (7x11)।[19]

मत्ती में सूचीबद्ध पीढ़ियों और लूका में दिए गये उल्लेख में आये अंतर के कारण आधुनिक प्रेक्षक अक्सर परेशान होते हैं। उन्हें डर है कि इस तरह के विरोधाभास के कारण धर्मशास्त्र की प्रेरणा और अधिकार पर संशय उत्पन्न हो सकता है। हालांकि, यह एक गलत प्रयास है की प्राचीन बाइबलीय लेखकों को वर्तमान समय के लेखपालों या वंशावली विशेषज्ञों की मानसिकता के अनुसार मजबूर किया जाए जो हर वस्तु को और पीढ़ियों की कुल संख्या को बिना किसी त्रुटियों के सूचीबद्ध करना चाहते है। बाइबल के लेखकों की आज के विश्लेषकों की तुलना में अलग प्राथमिकताएं थी, और हर एक नाम के साथ तत्कालिक पिता पुत्र के सम्बन्धों को सूचीबद्ध करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे निश्चित रूप से वंशावली में मुख्य पात्रों को ऐतिहासिक और धार्मिक कारणों से सूचीबद्ध कर रहे थे, परन्तु अक्सर अंको तथा शैलीगत कार्यों के प्रतीकात्मक उपयोग के कारण जो कुछ भी इनमें शामिल किया गया था उन सबने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

है।

ज़ाहिर है, की अंक “7” मत्ती और लूका दोनों के लिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन दोनों की वंशावलियों का निर्माण इसी अंक और उसके गुणकों के आधार पर हुआ है। उनकी गणना में मतभेद विभिन्न कालों की वंशावलियों की गिनती में आये अंतर के कारण या गलत सूचनाओं के कारण नहीं था परन्तु यह लेखकों का निर्णय था कि वे दाऊद से यीशु तक के पूर्वजों की दो अलग अलग पीढ़ियों पर जोर देना चाहते थे। दोनों सूचियों में कुछ भिन्न व्यक्ति शामिल हैं, परन्तु दोनों अंक “7” या उसके गुणकों के आधार पर समूहों को बांटते है।

मत्ती जानबूझकर अपने लेख में से कुछ नामों को छोड़ता है। उदाहरण के लिए, हालांकि मत्ती 1:8 में उज्जिय्याह का नाम योराम के तुरंत बाद सूचीबद्ध है, जैसे कि वह उसका पुत्र है, पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकें तीन राजाओं के बारे में बताती हैं जिन्होंने योराम से लेकर उज्जिय्याह (जिसे अज़र्याह भी कहा गया है[20]) के मध्यकाल में यहूदा पर राज्य किया था। जिन राजाओं का वर्णन नहीं किया गया है वह राजा हैं अहज्याह योआश (या येहोआश), और अमस्याह (1 इतिहास 3:11, 12; देखें 2 राजा 8:24; 12:1; 14:1)। जबकि NASB के अनुसार योराम “उज्जिय्याह का पिता” था, ASV के अनुसार योराम ने उज्जिय्याह को “जन्म” दिया। यद्यपि यह पुरातन है, लेकिन बाद में उपयोग किया गया शब्द यूनानी क्रिया γεννάω *(गेन्नाओ)*[21] के सार को प्रस्तुत करता है। यह पाठकों को यह एहसास कराने में सहायक है कि, बाइबलीय प्रयोग में, “जन्म” हमेशा तात्कालिक पिता पुत्र के सम्बन्ध को दर्शाने के लिए प्रयोग नहीं किया जाता।

कई बार यह किसी पूर्वज की ओर भी संकेत करता है जो कई पीढ़ियों पहले हुआ, जैसा योराम था, जो असल में उज्ज़ियाह के पर दादा का दादा था। जो इब्रानी शब्द יָלַד *(यालद)*, यूनानी शब्द के अनुरूप है जो सामान्य रूप से उत्पत्ति और अन्य पुराने नियम की पुस्तकों की वंशावली में पिता, अर्थात जिसके द्वारा पुत्र का “जन्म” हुआ है, उसके लिए प्रयोग किया गया है। ऐसे शब्द का अर्थ हमेशा अपने तुरंत बाद प्रारंभ होने वाली पीढ़ी के लिए प्रयोग नहीं किया जाता है। पॉल आर. गिलख्रीष्ट के अनुसार, “इब्रानी विचारधारा के अनुसार, कोई व्यक्ति बच्चे को जन्म देने के साथ ही उस बच्चे का माता पिता या उसके द्वारा उत्पन्न होनेवाली पीढ़ी का पुरखा बन जाता है।”[22] यह मत्ती के शब्दावली के अनुरूप है जिसमें यीशु को “दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र” करके संबोधित किया गया है (मत्ती 1:1)। मत्ती का यह तात्पर्य नहीं था कि यीशु, अब्राहम या दाऊद का तुरंत उत्तराधिकारी है; परंतु क्योंकि वे तो उसकी वंशावली के दूर के वंश में थे इसलिए वे उसके पिता या वंशज बने।

मत्ती की वंशावली में दूसरे राजा यहोयाकीम का नाम छोड़कर यहोयाकीन (यकुन्याह; मत्ती 1:11) को सूची में जोड़ता है मानो वह योशिय्याह का पुत्र है। वास्तव में, वह योशिय्याह का पोता था (2 राजा 23:34; 24:1-6)।

नए नियम तथा पुराने नियम की वंशावली में नामों को छोड़ना देखा जा

सकता है। पुराने नियम में इसका एक और उदाहरण एज्रा के याजकीय वंशावली में देखा जा सकता है (तुलना करें एज्रा 7:1-5 और 1 इतिहास 6:3-15)। 1 इतिहास की वंशावली की तुलना में एज्रा की वंशावली में छः नाम कम पाए जाते हैं जिसका तात्पर्य यह हुआ कि लेखक एज्रा की विस्तृत याजकीय वंशावली के बजाय एक संक्षिप्त याजकीय वंशावली का अभिलेख प्रस्तुत करता है। एज्रा की वंशावली के अभिलेख का आशय यह नहीं था कि सभी का नाम, हारून तक सूची में लिखा जाए बल्कि यह सिद्ध करना था कि वह याजक, मुख्य याजक के वंश का है। इसलिए एज्रा ने परमेश्वर के अधिकारिक याजक की भूमिका निभाई और उसने बंधुआई उपरांत 458में ई.पू. यरूशलेम के समाज में आवश्यकतानुसार सुधार की स्थापना की।[23]

सारांशः वंशावली में इस प्रकार की रिक्तता, संभवतः उत्पत्ति की पुस्तक में भी रही होगी। इस प्रकार की वंशावली के आधार पर पृथ्वी की निर्विवाद आयु स्थापित करना शक के दायरे से बाहर नहीं होगा। प्राचीनकाल में जब लिखना पढ़ना आम बात नहीं थी तो लोग अपने पूर्वजों का नाम कंठस्थ करते थे।[24] समय बीतने के साथ ही सूची इतनी बड़ी हो गई कि लोगों ने केवल मुखिया को ही सूची में रखा। जैसे ही लोगों ने लिखित रूप से इन आंकड़ों को सुरक्षित रखना प्रारंभ किया, तो परमेश्वर ने मूसा या किसी अन्य व्यक्ति को इसको लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह से इस सूची में कई रिक्तता रह गईं होंगी, जैसे कि कई पुराने नियम की सूची में तथा नए नियम की सूची में पाया जाता है। फिर भी, पर्याप्त सूचनाएं संगठित की गई है जिससे कि इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्य को हम समझ सकें। इसे प्रथम पुरुष और स्त्री से आरम्भ होकर अनगिनित पीढ़ियों से होते हुए प्रतिज्ञात “वंश” के रूप में मसीह के जन्म में पूरा होता देखा जा सकता है (3:15)। यदि इसमें कुछ नाम छूट भी गए हों और कुछ रिक्तता रह गई हो तौभी कुछ नहीं खोया है जो हमारे विश्वास को धूमिल कर सके। महत्वपूर्ण नाम तथा घटनाओं को हमारे लिए इसलिए सुरक्षित रखा गया है ताकि अंतिम विश्लेषण में हम यह समझ सकें कि “इतिहास, उसका इतिहास है।” कहानी अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर है जब परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह में सब कुछ निहित कर देगा (इफि. 1:10)।

प्रथम मनुष्यों का संक्षिप्त वर्णन (अध्याय 5)

एनोश के वृतांत को छोड़कर अध्याय 5 में अधिक पढ़ने को कुछ भी नहीं मिलता है। इसमें सामग्री को दोहराया गया है और पहले-पहले यह नामों और आयु की सूची को छोड़कर कुछ नहीं लगती। फिर भी, इसमें जब गहराई से मनन किया जाता है तो पाठकों को वंशावली के कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों का पता चलता है

आज की तरह, लोगों ने मृत्यु का सामना किया। एनोश को छोड़कर, सूची में जितने लोगों का नाम है वे सात सौ से एक हजार वर्ष तक जीवित रहे। इतनी लंबी आयु परमेश्वर ने किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही ठहराई होगी।

सर्वप्रथम, सृष्टि में दी गई पहली आज्ञा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" (1:28) की पूर्ति के लिए थी कि लोग सारी पृथ्वी पर भर जाये। द्वितीय, लोगों के दीर्घायु होने से, परमेश्वर का प्रकाशन मौखिक रूप से कई पीढ़ियों तक पहुँचा। लिखने का प्रथम प्रमाण निचली मिसोपोटामिया के सुमेर राज्य (3300 ई.पू.) में पाया जाता है;[25] अतः आदम की मृत्यु के पश्चात, लंबे समय तक मनुष्यों को परमेश्वर का प्रकाशन मौखिक रूप से आने वाले कई पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना पड़ा। इन समयों में, जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई, खोज की गई और संस्कृति नई ऊँचाई तक पहुँची (देखें 4:17-22); लेकिन उस समय कोई इतिहासकार नहीं थे जो आने वाले पीढ़ी के लिए इनको लिखकर रख सके। प्राचीनकाल के लोगों की दीर्घायु ने आज की पुस्तकों के स्थान पर कार्य किया: वृद्ध व्यक्ति अपने बच्चों, नाती पोतों और परपोतों को वे जानकारियां देते गए जो उन्होंने देखीं थीं और जो उनके पूर्वजों ने उन पर प्रकट की थी।

हालांकि, मनुष्यों की दीर्घायु ने उनके पतन में भी योगदान दिया होगा। जब न्याय कई वर्षों तक रुका रहता है तो दण्ड का डर भी कम हो जाता है। जितना लंबे समय तक दण्ड नहीं दिया जाएगा, उतने लंबे समय तक अपराधी दण्ड के भय से बचा रहेगा। मृत्युदण्ड का भय, जब वह निकट है तो भयंकर अपराधी को भी बुरे कार्य करने से रोकता है। मृत्यु से हम यह सीखकर धन्यवाद कर सकते हैं कि उसने हेरोदेस, नीरो, नेपोलियन, हिटलर और स्टालीन जैसे लोगों को हजारों वर्षों तक जीने और अपने निर्दयी तरीकों से शासन नहीं करने दिया।

अधिकांश आदमी जो उत्पत्ति 5 में वर्णित हैं, कैन और लेमेक के समान, हत्यारे नहीं थे परंतु वे पापी थे। इसलिए, चूँकि वे दीर्घायु तक जीवित रहे, हनोक को छोड़कर सबके बारे में यही कहा गया है, "... और वह मर गया।" यह सत्य हमको नम्र बनाता है और हमको यह समझने में सहायता करता है कि इस शारीरिक संसार में मृत्यु सब के ऊपर राज्य करती है (देखें रोमियों 5:21)। केवल दुष्ट ही इसका शिकार नहीं बनते हैं बल्कि, "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रा. 9:27)। मृत्यु अपने कार्य में विलंब कर सकती है परंतु अंततः सबको इसका सामना करना पड़ता है। कोई धन या सामर्थ्य इसकी ताकत को नहीं टाल सकता है।

अब तक, अधिकांश लोग भुला दिए गए हैं। आदम और हव्वा, कैन और हाबिल, और कैन के वंशज (उत्पत्ति 2-4) के संक्षिप्त इतिहास को छोड़कर, बाढ़ से पहले मनुष्य का इतिहास, उत्पत्ति 5 और 6 में पाया जाता है। इनमें अधिकांश इतिहास वंशावली का है जो कई वर्षों तक की पीढ़ियों में फैली हुई है।

बाढ़ पूर्व जानकारियाँ बहुत कम उपलब्ध है, इसका एक कारण यह हो सकता है कि संभवतः कुछ ही सामग्री सुरक्षित रखने के लायक थी। अधिकांश लोग मात्र अपना जीवन जीए, विवाह किए, बच्चे पैदा किए, दुष्टता की ओर बढ़ते गए और अंततः मर गए। उत्पत्ति का उद्देश्य, संपूर्ण मानव जाति का विस्तृत इतिहास प्रस्तुत करना नहीं था बल्कि इसका उद्देश्य तो सृष्टि की कथा, प्रथम पुरूष और स्त्री का पतन, और उनके जीवन में पाप और मृत्यु के राज का संक्षिप्त

विवरण प्रस्तुत करना था। इस पुस्तक के माध्यम से न्याय के मध्य परमेश्वर के अनुग्रह का पता लगाना भी था कि किस प्रकार परमेश्वर, स्त्री की "संतान" (3:15) को अकथित वंशावली के द्वारा आशीष देता रहा। यह आशीष शेत, हनोक और नूह के जीवन से स्पष्ट है। वे अब्राहम, इसहाक और याकूब जैसे वंशजों में और अधिक विशेष हो गए, जिन इस्राएलियों के द्वारा एक दिन सारी जाति के लोग आशीष प्राप्त करेंगे (गला. 3:8-29)।

उनकी मृत्यु के कुछ वर्षों या कुछ पीढ़ियों के बाद, मानव जाति के अधिकांश लोगों की स्मृति सपनों के तरह उड़ जाती है, अकथित रहती है या फिर भूला दी जाती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जब बुद्धिमान ने कहा, "व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है" (सभो. 1:2), तो उसने यह भी कहा,

> ... परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उन को कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा (सभो. 9:5, 6)।[26]

वास्तव में समस्त मानव जाति का स्पष्ट रूप से यही भाग है और अधिकांश लोग जो उत्पत्ति 5 के वंशावली में वर्णित हैं उनके साथ भी यही सच है। वचन में नामों की सूची हमें यह स्मरण दिलाती है कि हमारा शारीरिक जीवन केवल कुछ क्षणों का है और हम में से कुछ लोग इतिहास में लंबे समय तक स्मरण किए जाएंगे।

विश्वासयोग्य को परमेश्वर द्वारा भुलाए जाने की चिंता नहीं करनी चाहिए। "प्रभु अपनों को पहिचानता है" (2 तीमु. 2:19)। जो उसके आज्ञाकारी रहे, उनके नाम "जीवन के पुस्तक" में लिख दिए गए हैं (फिलि. 4:3; प्रका. 20:12-15)। जिनका नाम उस स्वर्ग की पुस्तक में लिख दिया गया उन्होंने प्रभु से प्रेम किया और उन्होंने अपने जीवन से उसको महिमा दी। उन्होंने अपने जीवन से अपने चारों ओर रहने वाले लोगों के जीवन को प्रभावित किया है, उन्होंने दूसरों की सेवा की है और उन्होंने उनकी सेवा परमेश्वर के नाम से की है। एक दिन वे यीशु की आनंदमय आवाज़ सुनेंगे, "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो" (मत्ती 25:21); "मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया" (मत्ती 25:40)।

अब तक, एक के जीवन ने प्रभावित किया। परमेश्वर ने हनोक को वंशावली सूची में विशेष स्थान क्यों दिया? सर्वप्रथम, हनोक ने संसार को अपने प्रचार के द्वारा सिखाया, जिसमें दुष्टों के विरूद्ध न्याय के लिए प्रभु के आगमन पर जोर दिया गया है (यहूदा 14, 15)।[27] परमेश्वर की प्राथमिक इच्छा नाश करने की नहीं है बल्कि दुष्टों को उनके पापों के प्रति ताड़ना देने की और उनको पश्चाताप का अवसर प्रदान करने की है (2 पतरस 3:9, 10)।

दूसरी बात यह है कि उसने संसार को अपने जीवन के द्वारा सिखाया जिसको लेखक ने संक्षिप्त में इस प्रकार लिखा: "हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा" (5:22, 24)। विश्वास, खराई और पवित्रता में बिताया गया जीवन किसी भी व्यक्ति के संदेश को प्रभावशाली बनाती है। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा कि हनोक, "उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।" (इब्रा. 11:5)। संसार की दुष्टता और अंधकार ने उसको घेरा हुआ था फिर भी उसके अच्छे कार्य और पवित्र जीवन प्रकाशस्तम्भ समान था जो परमेश्वर की महिमा के लिए चमकता था (देखें मत्ती 5:16)।

तीसरी बात जो हनोक ने संसार को सिखाई वह यह थी कि वह किस प्रकार इस संसार से कूच कर गया। उत्पत्ति के लेखक ने लिखा कि "परमेश्वर ने उसे उठा लिया" (5:24), और इब्रानियों ने पत्री के लेखक ने लिखा कि उसे "उठा लिया गया" (इब्रा. 11:5)। बाढ़ से पहले पाप के गर्त मे डूबा मानव संसार को यह जानने की आवश्यकता थी कि मनुष्य का भाग्य केवल दुःख, निराशा और मृत्यु में ही निहित नहीं है। हनोक का परमेश्वर के द्वारा उठा लिया जाना यह प्रमाणित करता है कि इस जीवन से परे एक और जीवन हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। इसके साथ ही, यह इस बात की गवाही देता है कि इस जगत का परमेश्वर उनको अपनी भलाई से तृप्त करता और आदर देता है जो उसकी इच्छानुसार अपना जीवन बिताते हैं। अंत में, उसके जीवन ने यह प्रकांड तथ्य प्रस्तुत किया कि पाप पर अधिकार प्राप्त कर लेना है, जैसा परमेश्वर ने कैन को 4:7 में करने के लिए कहा था; और वह ईश्वरीय समर्थन को प्राप्त करने और परमेश्वर के साथ अनन्तता व्यतीत करने का मार्ग है।

समाप्ति नोट्स

[1]सेपेर का मूल अर्थ "हस्तलेख" अर्थात "लेखन सामग्री का टुकड़ा" है ... जिस पर कुछ लिखा गया हो। प्राचीन समय में इसका अर्थ पत्थर की पटिया, पपीरस, या वेलम (चम्रपत्र) पर कुछ लिखा हो सकता था। बाद में इसका अर्थ लिखित आलेख या पुस्तक था। (जे. कुह्लेविन, "סֵפֶר," थियोलॉजिकल लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट में अनुवादक, मार्क ई. बिडडल, सम्पादन एर्न्स्ट जेन्नी एंड क्लाउस वेस्टरमन [पीबॉडी, मास्स.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1997], 2:808.) [2]लेख यह नहीं बताता कि परमेश्वर ने किस प्रकार इन जीवनकालों को बढ़ाया। एक सम्भावित कारण यह हो सकता है कि बाढ़ से पहले आकाश में गहरी वाष्प की छतरी थी जो सूरज की उम्र बढ़ाने वाली घातक किरणों को छानती थी। इस कारण तब के लोगों की उम्र इतनी जल्दी नहीं बढ़ती थी जैसे आजकल बढ़ती है। (जॉन सी. व्हिटकोंब, जूनियर, और हेनरी एम. मोरिस, *दी जेनेसिस फ्लड* [फिलडेल्फिया: प्रेसबिटेरियन एंड रिफार्मड पब्लिशिंग कम्पनी, 1961], 399-405.) [3]नहेम्याह 11:4 में एक भिन्न "महललेल" का ज़िक्र है और 1 इतिहास 4:18 में एक भिन्न "येरेद" प्रकट होता है। [4]कुछ और परिच्छेद समानता में हैं। मलाकी 2:6 में प्रभु प्रकट करता है कि वह याजकों से किस बात की अपेक्षा करता है। लेवियों के सन्दर्भ में, परमेश्वर कहता है, "वह शान्ति और सीधाई से मेरे संग संग चलता था।" यह भी लिखा है कि अब्राहम और इसहाक परमेश्वर के "सम्मुख" चलते थे (17:1; 24:40; 48:15)। [5]जोन डी. लेवेनसन, *दी ज्यूइश स्टडी बाइबल* में "जेनेसिस," सम्पादन एडेले बर्लिन और मार्क ज्वी ब्रेत्तलेर (न्यू यॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 20. [6]उत्पत्ति

5 में वर्णित हनोक की कहानी की नकल अन्यजाति साहित्य में की गई है। देखें गॉर्डोन जे. वेन्हम, *जेनेसिस 1-15*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 1 (वाको, टेक्स: वर्ड बुक्स, 1987), 128. [7]डेरेक किडनर, *जेनेसिस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेन्ट्री*, दी टिंडल ओल्ड टेस्टामेंट कमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, Ill.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1967), 81. [8]लियोनार्ड जे. कॉप्स, "נוּ," *TWOT* में, 2:562-63. [9]उत्पत्ति 10:1 के अनुसार, नूह के पोतों का जन्म बाढ़ के बाद हुए थे। [10]के. ए. किचन के अनुसार सृष्टि को रचने का समय 4000 ई.पू. नहीं हो सकता, क्योंकि मध्य पश्चिम की प्राचीन अवशेष यह दर्शाते है कि उस कथित समय से हज़ारों साल पहले मानव बसावट और सभ्यताओं का विकास था। (के. ए. किचन, *एन्शियंट ओरिएंट एंड ओल्ड टेस्टामेंट* [डाउनर ग्रोव, Ill.: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1966], 36-37.)

[11]गलेसन एल. अर्खर, जूनियर, *दी एक्स्पोसिटर बाइबल कमेन्ट्री*, वॉल्यूम 1 में "दी क्रोनोलॉजी ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट," *इंट्रोडक्टरी आर्टिकल्स*, सम्पादन. फ्रैंक ई. गैबेलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिश: जोंदेर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 361. [12]जॉन एच. सैलहमेर, *दी एक्स्पोसिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2 जेनेसिस, एक्सोडस, लेविटीकस, नंबर्स में "जेनेसिस," संपादन, फ्रैंक ई. गैबेलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिश.: जोंदेर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 72. [13]केनेथ ए. मथ्यूस, *जेनेसिस 1-11:26*, द न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री, वोल 1A (नैशविल: ब्रॉडमैन एंड होलमैन पब्लिशर्स, 1996), 303-5. [14]आर. के. हैरिसन, *दी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल एन्सैक्लोपेडिया* में "जिन्यालोजी," रिवाइज्ड एड. सम्पादन ज्यॉफ्री डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिश: विलियम बी. ईर्ड्मंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:426. [15]इसहाक चालीस साल का था जब उसकी रिबका से विवाह हुआ (25:20), और एसाव की भी वही उम्र थी जब उसने अपनी पहली पत्नी से विवाह किया (26:34); परन्तु यह किसी नियम के बजाय अपवाद हो सकता है। [16]एक आकलन "तीस वर्ष या कम" है (हैरिसन, 2:426)। [17]हालांकि वंशावलियां आमतौर पर पुरुष वंशजों के विषय में होती हैं, पर मत्ती के सुसमाचार वर्णन में मसीह की वंशावली में कई स्त्रियों के नाम भी थे (मत्ती 1:3-6, 16)। [18]इसमें नामात, लेमेक की पुत्री शामिल नहीं है, क्योंकि स्त्रियों की अकसर गणना नहीं की जाती थी। [19]जैक एम. सस्सों, *दी इंटरप्रेटर डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल* में "जनरेशन सेवेंथ," सप्लीमेंट्री वॉल्यूम, सम्पादन कीथ क्रिम (नैशविल: अबिंगडन प्रेस 1976), 355-56. [20]उसे 2 राजा 14:21 में "अजर्याह" भी कहा गया और 2 इतिहास 26:1 में "उज्जिय्याह" कहा गया।

[21]कई नवीन अनुवाद "उत्पन्न हुआ" के स्थान पर संज्ञा "पिता" इस्तेमाल करते हैं। [22]पॉल आर. गिलख्रीष्ट, "יָלַד," *TWOT* में, 1:379. [23]एफ. चार्ल्स फ्रेशम, *द बुक आफ एज़्रा एण्ड नहेमिय्याह*, दि न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 98. [24]यह अभी भी पृथ्वी के दूर दराज के असाक्षर क्षेत्रों में ऐसा ही किया जाता है। [25]आन्द्रे लेमाएर, "राइटिंग एण्ड राइटिंग मटेरियल्स," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी*, संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबल डे, 1992), 6:999. [26]कुछ का मानना है कि बुद्धिमान यह कह रहा था कि या तो मृतक बेहोश हैं या फिर जब वे मर जाते हैं तो उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत, वह यह कह रहा था कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है उसके प्रति वे अज्ञान हैं और जो पृथ्वी पर जीते हैं वे भी जल्द ही उनके बारे में भूल जाते हैं जिससे कि उनकी स्मृति जल्द ही समाप्त हो जाती है। [27]यहूदा 14, 15 में हनोक पर वार्तालाप के लिए देखें ड्वान वार्डन, *1 और 2 पतरस और यहूदा*, ट्रूथ फ़ोर टुडे कमेंट्री (सीर्सी, आर्क.: रिसॉर्स पब्लिकेशन्स, 2009), 499-502.